कुमार जीवन - 71

अव्यक्त बापदादा :-

➳ _ ➳ कुमारों से - कुमारों को भी चांस मिलेगा। जब सेवा बहुत बढ़ेगी, इतनी सब आत्माओं को सन्देश देना है तो क्या थोड़ी सी आत्मायें कर सकेंगी! तो आप लोगों को चांस मिलेगा लेकिन आप लोग ऐसे पहले से तैयार हो जाओ। जो टीचर्स को सप्ताह कोर्स कराना पड़ता है और **आप एक सेकण्ड में अपनी दृष्टि-वृत्ति द्वारा परिचय दे सको**। ऐसी सेवा कुमारों को करनी है।

➳ _ ➳ अभी देखो बापदादा स्पष्ट सुनाता है कि कुमारों को सेन्टर पर क्यों नहीं रखते हैं? कारण क्या है? डर लगता है दादियों को। और कभी-कभी प्रैक्टिकल में नुकसान होते भी हैं। ऐसे ही डर नहीं लगता, होता भी है। **अगर कुमार पक्के योगी बन जायें, ज़रा भी सिवाए आत्मा के और कोई बात में जायें नहीं तो कुमारों को बहुत सेवाकेन्द्र मिल सकते हैं। अभी नुकसान का डर है। क्योंकि रावण की चीज़ अन्दर रखी है ना, इसलिए डर लगता है।** लेकिन जो कुमारियों ने इतने वर्ष में सेवा की, कुमार फास्ट सेवा करेंगे। चांस बहुत अच्छा मिलना है लेकिन पहले तैयार हो जाओ। पहले दादियों को बेफिक्र बनाओ।

➳ _ ➳ जहाँ कुमार-कुमारियाँ इकट्ठे रहते हैं ना तो डर लगता है, फॉरेन की बात अलग है, वहाँ तो फीमेल भी मेल है, मेल भी फीमेल हैं। वहाँ की बात अलग है। लेकिन भारत में अगर दो-तीन भाई सेन्टर चलायें तो पहले तो लोग डिस्कस करने के सिवाए और कुछ नहीं करेंगे। और जोश होता है ना तो डण्डा भी लग सकता है। इसलिए आप तैयार हो जाओ, आपको सेवा बहुत मिलनी है और जितना कुमारियों को सेवा का चांस है, ऐसे अगर आप पक्के योगी बन गये तो थोड़े समय में आपका खाता भी उतना ही जमा हो सकता है। लेकिन **बापदादा को दिल से गैरेन्टी दिलाओ, कागज वाला बापदादा नहीं मानते।** आज कागज पर पानी और स्याही से नहीं, खून से भी लिखकर देते हैं और एक मास के बाद कुमार से युगल बनकर आते हैं। तो ऐसी गैरेन्टी नहीं चाहिये।

➳ _ ➳ लेकिन डायमण्ड जुबली में बापदादा ने देखा कि कुमार बहुत अच्छा सबसे नम्बरवन पुरुषार्थ कर रहे हैं तो कुमार समय को भी समीप ला सकते हैं। समय समीप आ जायेगा और आपकी सेवा विशाल होती जायेगी। लेकिन बापदादा रोज़ वतन में चेक करते हैं ऐसे ही नहीं कोई यहाँ कहेगा तो मान लेंगे। प्रैक्टिकल बाप चेक करेगा। फिर देखो कुमार फर्स्ट नम्बर ले सकते हैं। समझा? सन्देश देने में तो कुमार वैसे ही होशियार हो और देखो जिस सेन्टर पर कुमार नहीं आते हैं तो वहाँ सेवा की वृद्धि नहीं होती है। ऐसे हैं ना टीचर्स? टीचर्स कहती हैं सेवा के लिए किसको भेंजे! तो कुमार अभी भी सेवा कर रहे हैं लेकिन **सिर्फ ये पक्का निश्चय कर लो कि हम हैं ही योगी आत्मायें। सदा योगी हैं। शरीर के तरफ स्वप्न मात्र भी संकल्प नहीं जाये।** तो कुमार कमाल करना, बापदादा आपका चेक करके ग्रुप बनायेगा।

(09-01-1996)

➢➢ पुरुषार्थ के मुख्य बिंदु

➳ _ ➳ किसी भी धर्म की स्थापना में या किसी धर्म के मार्ग पर चलने की

→ जिस चीज़ की सबसे ज्यादा आवश्यकता होती है :-

- वह है :- “सहनशक्ति”

➳ _ ➳ यह संस्कार हमारे नहीं

→ अल्प काल के संस्कार

→ मध्य काल के संस्कार

→ रावण के संस्कार

→ पराये संस्कार

➳ _ ➳ यह संस्कार हमारे हैं

→ आदि काल के संस्कार

→ अनादी संस्कार

→ ओरिजिनल संस्कार

→ भगवान के संस्कार

➳ _ ➳ वृत्ति अर्थात

→ लहरें / प्रकम्पन्न

- इसका निर्माण स्मृतियों से होता है
  - महान स्मृतियों से स्वतः ही श्रेष्ठ सकारात्मक लहरें उत्पन्न होंगी
  - वृत्ति परिणाम है स्मृतियों का

➢➢ देह .. देह के पदार्थ ... देह के सम्बन्ध कल्पना और भ्रम है

➳ _ ➳ हमारा एक ही लक्ष्य है

→ देह के आकर्षण से स्वप्न / संकल्प से मुक्त होना

➳ _ ➳ रोगी व्यक्ति को तो खाने पीने की चीज़ें बिलकुल अच्छी नहीं लगती

→ जबकि वस्तु तो वही है जो निरोगी मनुष्य उसे बड़े चाव से खा रहा है ...

- तो क्या सच में वह वस्तु जायकेदार है ?
  - या वह जायका सिर्फ एक कल्पना मात्र है... भ्रम मात्र है ...

➳ _ ➳ एक पुरुष को एक स्त्री बहुत सुंदर दिखाई देती है

→ परन्तु उसके भाई को वह स्त्री उतनी सुंदर नहीं दिखाई देती

- तो क्या सच में वह स्त्री इतनी सुंदर है ?
  - या फिर उसकी सुन्दरता सिर्फ एक कल्पना मात्र है... भ्रम मात्र है ...